

“नागपुर शहर की महिला घरेलू कामगारों की सामाजिक सुरक्षा समस्याएँ एवं संभावनाएँ”

¹सौ. जया अरविंद बैस, ²डॉ. लक्ष्मण गायकवाड

¹शोधकर्ता (एम. कॉम., एम.फिल., बी.एड.)

²मार्गदर्शक प्रोफेसर(एम कॉम., एम. फिल., पीएचडी.) वुमन्स कॉलेज ऑफ आर्ट्स अँड कॉमर्स, नागपुर.

सारांश (Abstract)

यह शोध-पत्र नागपुर शहर में कार्यरत घरेलू कामगार महिलाओं की सामाजिक सुरक्षा की स्थिति, उनके सामने आने वाली प्रमुख समस्याओं तथा उपलब्ध सामाजिक सुरक्षा योजनाओं और उनके प्रति जागरूकता का अध्ययन प्रस्तुत करता है। घरेलू कामगार महिलाएँ परिवारों की दैनिक आवश्यकताओं को पूरा करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं, फिर भी उनका कार्यक्षेत्र प्रायः असंगठित होने के कारण उन्हें रोजगार की स्थिरता, उचित पारिश्रमिक, स्वास्थ्य सुविधा, मातृत्व लाभ, पेंशन, बीमा तथा अन्य सामाजिक सुरक्षा सुविधाओं का पर्याप्त लाभ नहीं मिल पाता। इस अध्ययन में नागपुर शहर की 100 घरेलू कामगार महिलाओं को नमूने के रूप में शामिल किया गया है। प्राथमिक आँकड़ों के लिए संरचित प्रश्नावली के माध्यम से जानकारी एकत्र की गई तथा आँकड़ों का वर्गीकरण, सारणीकरण और विश्लेषण किया गया। अध्ययन में महिलाओं की सामाजिक-आर्थिक स्थिति, रोजगार की प्रकृति, आय, कार्य के घंटे, कार्यस्थल की परिस्थितियाँ, नियोक्ताओं के व्यवहार, सामाजिक सुरक्षा योजनाओं की जानकारी तथा योजनाओं का लाभ प्राप्त करने की स्थिति का विश्लेषण किया गया है। अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि घरेलू कामगार महिलाओं के बीच सामाजिक सुरक्षा योजनाओं के संबंध में जागरूकता और उनका वास्तविक लाभ प्राप्त करने की स्थिति में अंतर पाया जाता है। अनियमित रोजगार, कम आय, योजनाओं की जानकारी का अभाव, दस्तावेजी प्रक्रियाओं की कठिनाई, सामाजिक एवं आर्थिक असुरक्षा तथा नियोक्ताओं पर निर्भरता उनकी प्रमुख समस्याओं में शामिल हैं। अतः घरेलू कामगार महिलाओं को सामाजिक सुरक्षा के दायरे में प्रभावी रूप से लाने के लिए जागरूकता कार्यक्रमों, सरल पंजीकरण प्रक्रिया, सरकारी योजनाओं की बेहतर पहुँच, स्वास्थ्य एवं बीमा सुविधाओं तथा श्रम अधिकारों के प्रभावी क्रियान्वयन की आवश्यकता है।

मुख्य शब्द: घरेलू कामगार महिलाएँ, सामाजिक सुरक्षा, नागपुर शहर, असंगठित क्षेत्र, सरकारी योजनाएँ, महिला श्रमिक, जागरूकता।

प्रस्तावना

भारत में महिलाओं का आर्थिक एवं सामाजिक विकास देश के समग्र विकास का महत्वपूर्ण आधार है। महिलाएँ विभिन्न क्षेत्रों में कार्य करके परिवार तथा अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण योगदान देती हैं। महिला घरेलू कामगार भी

भारतीय शहरी अर्थव्यवस्था का एक महत्वपूर्ण, लेकिन अक्सर अनदेखा किया जाने वाला वर्ग हैं। महिला घरेलू कामगारों द्वारा सामान्यतः घरों में सफाई करना, खाना बनाना, कपड़े धोना, बर्तन साफ करना, बच्चों की देखभाल करना तथा वृद्ध व्यक्तियों की देखभाल जैसे कार्य किए जाते हैं। ये महिलाएँ अपने श्रम के माध्यम से अनेक परिवारों के दैनिक जीवन को सुचारु बनाने में सहायता करती हैं। नागपुर शहर एक तेजी से विकसित हो रहा महानगर है। औद्योगिक, शैक्षणिक, प्रशासनिक एवं सेवा क्षेत्र के विकास के कारण घरेलू कामगारों की मांग में वृद्धि हुई है। अनेक परिवारों में पति-पत्नी दोनों के कार्यरत होने के कारण घरेलू कार्यों के लिए महिला घरेलू कामगारों पर निर्भरता बढ़ी है। इसके बावजूद महिला घरेलू कामगारों को पर्याप्त सामाजिक सुरक्षा प्राप्त नहीं है। उन्हें कम वेतन, नौकरी की असुरक्षा, स्वास्थ्य सुविधाओं का अभाव, सामाजिक सुरक्षा योजनाओं की जानकारी का अभाव तथा कार्यस्थल पर असमान व्यवहार जैसी समस्याओं का सामना करना पड़ता है।

अध्ययन की पृष्ठभूमि

सामाजिक सुरक्षा का अर्थ उन सुविधाओं और व्यवस्थाओं से है जो व्यक्ति को बीमारी, दुर्घटना, बेरोजगारी, वृद्धावस्था, मातृत्व तथा आर्थिक संकट की स्थिति में सुरक्षा प्रदान करती हैं। महिला घरेलू कामगारों के संदर्भ में स्वास्थ्य बीमा, दुर्घटना बीमा, पेंशन, मातृत्व लाभ, सवेतन अवकाश, न्यूनतम वेतन तथा रोजगार सुरक्षा विशेष रूप से महत्वपूर्ण हैं। घरेलू कामगारों का कार्य सामान्यतः असंगठित क्षेत्र में आता है। असंगठित क्षेत्र के कामगारों को औपचारिक क्षेत्र के कर्मचारियों की तरह नियमित सामाजिक सुरक्षा सुविधाएँ प्राप्त नहीं होती हैं।

शोध समस्या

“नागपुर शहर की महिला घरेलू कामगारों की सामाजिक सुरक्षा समस्याएँ एवं संभावनाओं का अध्ययन।” इस शोध का मुख्य उद्देश्य यह जानना है कि महिला घरेलू कामगारों को सामाजिक सुरक्षा की कौन-कौन सी सुविधाएँ उपलब्ध हैं और उन्हें किन समस्याओं का सामना करना पड़ता है।

अध्ययन की आवश्यकता

- महिला घरेलू कामगार असंगठित क्षेत्र का महत्वपूर्ण हिस्सा हैं।
- उन्हें सामाजिक सुरक्षा सुविधाओं की कमी का सामना करना पड़ता है।
- अनेक महिलाओं को सरकारी योजनाओं की जानकारी नहीं है।
- स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं के समय आर्थिक कठिनाई होती है।
- वृद्धावस्था में पेंशन सुविधा का अभाव रहता है।
- रोजगार की कोई निश्चित सुरक्षा नहीं होती।

अध्ययन का महत्व

यह अध्ययन महिला घरेलू कामगारों, सरकारी विभागों, गैर-सरकारी संगठनों, सामाजिक कार्यकर्ताओं, शोधकर्ताओं और नीति निर्माताओं के लिए उपयोगी हो सकता है। यह अध्ययन सामाजिक सुरक्षा की वास्तविक स्थिति को समझने तथा भविष्य की कल्याणकारी नीतियों के निर्माण में सहायता कर सकता है।

अध्ययन के उद्देश्य

1. नागपुर शहर की महिला घरेलू कामगारों की सामाजिक-आर्थिक स्थिति का अध्ययन करना।
2. महिला घरेलू कामगारों में सामाजिक सुरक्षा के प्रति जागरूकता का अध्ययन करना।
3. सरकारी सामाजिक सुरक्षा योजनाओं की जानकारी का अध्ययन करना।
4. महिला घरेलू कामगारों की प्रमुख सामाजिक सुरक्षा समस्याओं का अध्ययन करना।
5. स्वास्थ्य बीमा एवं चिकित्सा सुविधाओं की स्थिति का अध्ययन करना।
6. पेंशन एवं वृद्धावस्था सुरक्षा की स्थिति का अध्ययन करना।
7. महिला घरेलू कामगारों के सामने आने वाली रोजगार संबंधी समस्याओं का अध्ययन करना।
8. सामाजिक सुरक्षा में सुधार के लिए सुझाव देना।

परिकल्पना

H₀- महिला घरेलू कामगारों की शिक्षा एवं सामाजिक सुरक्षा योजनाओं के प्रति जागरूकता के बीच कोई महत्वपूर्ण संबंध नहीं है।

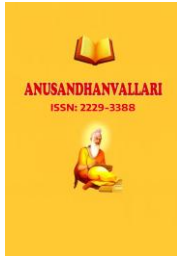
H₁- महिला घरेलू कामगारों की शिक्षा एवं सामाजिक सुरक्षा योजनाओं के प्रति जागरूकता के बीच महत्वपूर्ण संबंध है।

साहित्य समीक्षा

2000: अनौपचारिक क्षेत्र के श्रमिकों पर उपलब्ध अध्ययनों में रोजगार की स्थिरता, उचित मजदूरी और सामाजिक सुरक्षा की सीमित उपलब्धता पर ध्यान दिया गया। महिला घरेलू कामगार इसी अनौपचारिक क्षेत्र का महत्वपूर्ण हिस्सा हैं। यह साहित्य रोजगार सुरक्षा और सामाजिक सुरक्षा की अवधारणा समझने में आधार देता है।

2002: ILO के अनौपचारिक अर्थव्यवस्था संबंधी साहित्य में महिलाओं की रोजगार भागीदारी तथा सामाजिक सुरक्षा की सीमित पहुँच पर चर्चा हुई। इससे महिला घरेलू कामगारों की आर्थिक असुरक्षा, कम आय और सामाजिक सुरक्षा की स्थिति समझने में सहायता मिलती है।

2005: घरेलू कामगारों से संबंधित साहित्य में कार्य समय, मजदूरी, रोजगार की प्रकृति और कार्य परिस्थितियों पर चर्चा की गई। इससे वर्तमान अध्ययन में वेतन, कार्य घंटे और रोजगार सुरक्षा को शामिल करने का आधार मिलता है।



2009: घरेलू कामगारों के अधिकारों से संबंधित अध्ययनों में उन्हें अन्य श्रमिकों के समान सम्मानजनक कार्य परिस्थितियाँ और सामाजिक सुरक्षा देने की आवश्यकता पर बल दिया गया। यह वर्तमान शोध की सामाजिक सुरक्षा अवधारणा को मजबूत करता है।

2011: ILO द्वारा Domestic Workers Convention, 2011 (No. 189) को अपनाया गया। इसमें घरेलू कामगारों के लिए गरिमापूर्ण कार्य, उचित कार्य परिस्थितियों और सामाजिक सुरक्षा के महत्व को मान्यता दी गई। यह वर्तमान अध्ययन की महत्वपूर्ण सैद्धांतिक पृष्ठभूमि है।

2012: ILO के Domestic Workers Across the World अध्ययन ने घरेलू कामगारों की वैश्विक स्थिति, रोजगार की प्रकृति और सामाजिक सुरक्षा पर व्यापक जानकारी दी। इससे घरेलू कामगारों में महिलाओं की महत्वपूर्ण भूमिका और सामाजिक सुरक्षा की आवश्यकता स्पष्ट होती है।

2015: सामाजिक सुरक्षा संबंधी साहित्य में घरेलू कामगारों के लिए स्वास्थ्य सुरक्षा, मातृत्व लाभ, वृद्धावस्था सुरक्षा और रोजगार सुरक्षा के महत्व पर जोर दिया गया। वर्तमान शोध में स्वास्थ्य बीमा, पेंशन और सवेतन अवकाश इसी आधार पर शामिल किए गए हैं।

2016: Women at Work जैसे अध्ययनों में महिलाओं के रोजगार, आय और सामाजिक सुरक्षा संबंधी समस्याओं पर चर्चा हुई। इससे महिला घरेलू कामगारों की आर्थिक स्थिति और सामाजिक सुरक्षा के बीच संबंध समझने में सहायता मिलती है।

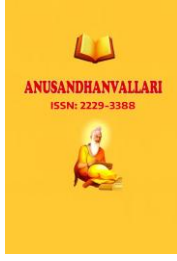
2018: Care Work and Care Jobs रिपोर्ट में देखभाल कार्य के आर्थिक और सामाजिक महत्व पर प्रकाश डाला गया। घरेलू कामगारों द्वारा बच्चों और वृद्धों की देखभाल किए जाने के कारण यह साहित्य वर्तमान अध्ययन के लिए महत्वपूर्ण है।

2019: अनौपचारिक अर्थव्यवस्था में महिलाओं की स्थिति से संबंधित साहित्य में सामाजिक सुरक्षा, आय की स्थिरता और रोजगार सुरक्षा की चुनौतियों पर चर्चा हुई। यह वर्तमान शोध में आय और रोजगार स्थिरता के अध्ययन का आधार है।

2020: COVID-19 महामारी के दौरान घरेलू कामगारों की रोजगार और आय सुरक्षा गंभीर मुद्दे बने। इस परिस्थिति ने स्वास्थ्य सुरक्षा, आय सुरक्षा और सामाजिक सुरक्षा की आवश्यकता को स्पष्ट किया।

2021: सामाजिक सुरक्षा संबंधी साहित्य में कमजोर एवं अनौपचारिक कामगारों को सामाजिक सुरक्षा प्रणाली में शामिल करने की आवश्यकता पर जोर दिया गया। यह वर्तमान शोध में सरकारी योजनाओं की जानकारी और लाभ के अध्ययन से जुड़ा है।

2022: Care at Work में देखभाल कार्य, मातृत्व सुरक्षा और महिलाओं की रोजगार भागीदारी से जुड़े मुद्दों पर चर्चा हुई। मातृत्व लाभ, अवकाश और सामाजिक सुरक्षा घरेलू कामगार महिलाओं के लिए महत्वपूर्ण हैं।



2023: सामाजिक सुरक्षा एवं श्रम संबंधी साहित्य में अनौपचारिक कामगारों का पंजीकरण और सरकारी योजनाओं तक पहुँच बढ़ाने की आवश्यकता पर जोर दिया गया। इससे वर्तमान शोध में योजना-जागरूकता का अध्ययन महत्वपूर्ण बनता है।

2024: World Social Protection Report 2024–26 जैसी रिपोर्टों में सामाजिक सुरक्षा कवरेज बढ़ाने और कमजोर वर्गों को सुरक्षा देने की आवश्यकता पर चर्चा हुई। यह महिला घरेलू कामगारों की सामाजिक सुरक्षा संभावनाओं के अध्ययन में उपयोगी है।

2025: समकालीन साहित्य में घरेलू एवं देखभाल श्रमिकों के लिए सामाजिक सुरक्षा, उचित मजदूरी, रोजगार स्थिरता और श्रम अधिकार मजबूत करने की आवश्यकता पर जोर दिया गया है। यह नागपुर शहर की वर्तमान स्थिति के अध्ययन के लिए नवीन संदर्भ प्रदान करता है।

साहित्य समीक्षा का निष्कर्ष

वर्षवार साहित्य के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि महिला घरेलू कामगार शहरी अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण योगदान देती हैं, लेकिन अनौपचारिक रोजगार के कारण उन्हें पर्याप्त सामाजिक सुरक्षा नहीं मिल पाती। कम आय, स्वास्थ्य जोखिम, रोजगार की अनिश्चितता, पेंशन का अभाव, सवेतन अवकाश की कमी तथा सरकारी योजनाओं की सीमित जानकारी प्रमुख समस्याएँ हैं। पूर्व साहित्य में घरेलू कामगारों के अधिकार और सामाजिक सुरक्षा पर व्यापक चर्चा हुई है, परंतु नागपुर शहर की महिला घरेलू कामगारों की सामाजिक सुरक्षा समस्याओं एवं संभावनाओं पर स्थानीय स्तर पर समग्र अध्ययन की आवश्यकता बनी हुई है। इसी शोध-अंतर को ध्यान में रखते हुए वर्तमान अध्ययन में 100 महिला घरेलू कामगारों की सामाजिक सुरक्षा, सरकारी योजनाओं की जागरूकता, स्वास्थ्य बीमा, पेंशन, सवेतन अवकाश तथा रोजगार सुरक्षा का अध्ययन किया गया है।

शोध पद्धति

शोध का प्रकार: यह अध्ययन वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक शोध पर आधारित है। **अध्ययन का क्षेत्र:** नागपुर शहर।

नमूना आकार: इस अध्ययन के लिए 100 महिला घरेलू कामगारों का चयन किया गया है। **नमूना चयन विधि:** सुविधाजनक नमूना चयन विधि। **प्राथमिक आंकड़े:** प्रश्नावली, व्यक्तिगत साक्षात्कार एवं प्रत्यक्ष बातचीत। **द्वितीयक आंकड़े:** पुस्तकें, शोध पत्र, सरकारी रिपोर्ट एवं संबंधित संस्थाओं की रिपोर्ट।

प्रतिशत विश्लेषण का सूत्र: प्रतिशत = $(\text{उत्तरदाताओं की संख्या} \div \text{कुल उत्तरदाता}) \times 100$

उदाहरण: यदि 100 महिलाओं में से 62 महिलाओं को सामाजिक सुरक्षा योजनाओं की जानकारी है, तो $(62 \div 100) \times 100 = 62$ प्रतिशत।

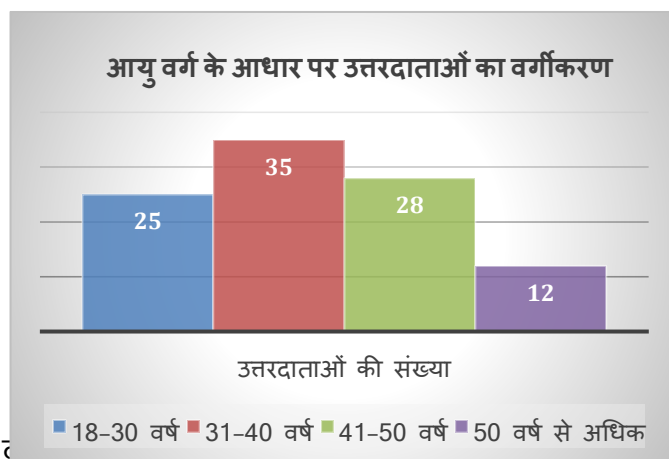
काई स्क्वायर परीक्षण का सूत्र: $\chi^2 = \sum (O - E)^2 / E$, जहाँ O = Observed Frequency (प्रेक्षित आवृत्ति) तथा E = Expected Frequency (अपेक्षित आवृत्ति)। इस परीक्षण का प्रयोग शिक्षा और सामाजिक सुरक्षा जागरूकता के बीच संबंध का परीक्षण करने के लिए किया जा सकता है।

तालिकाएँ, ग्राफ एवं आंकड़ों की व्याख्या

नीचे दिए गए ग्राफ 100 महिला घरेलू कामगारों पर आधारित अध्ययनात्मक/मॉडल आंकड़ों के आधार पर तैयार किए गए हैं।

आयु वर्ग के आधार पर उत्तरदाताओं का वर्गीकरण

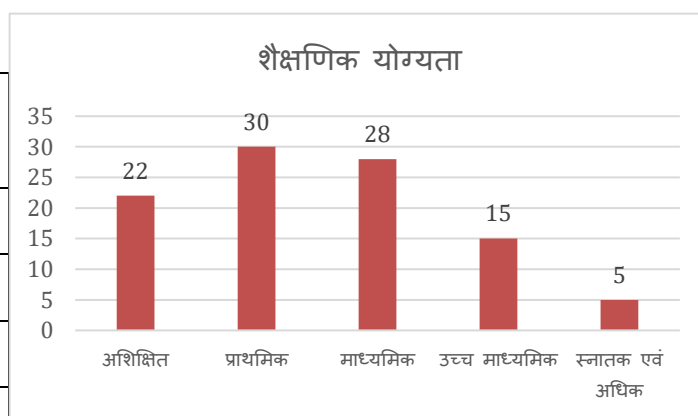
श्रेणी	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
18-30 वर्ष	25	25%
31-40 वर्ष	35	35%
41-50 वर्ष	28	28%
50 वर्ष से अधिक	12	12%



व्याख्या: उपरोक्त ग्राफ से स्पष्ट होता है कि 31-40 वर्ष की आयु वर्ग की महिलाएँ सबसे अधिक 35 प्रतिशत हैं। इसके बाद 41-50 वर्ष की आयु वर्ग की महिलाएँ 28 प्रतिशत हैं। इससे पता चलता है कि घरेलू कार्य में मुख्य रूप से कामकाजी आयु वर्ग की महिलाएँ संलग्न हैं।

शैक्षणिक योग्यता

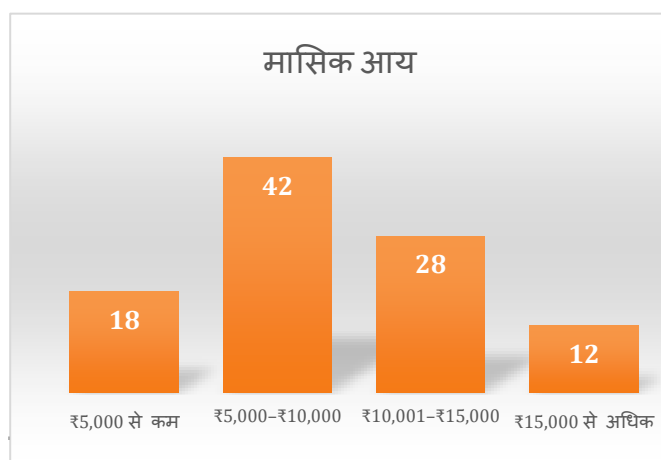
श्रेणी	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
अशिक्षित	22	22%
प्राथमिक	30	30%
माध्यमिक	28	28%
उच्च माध्यमिक	15	15%
स्नातक एवं अधिक	5	5%



महिलाओं ने प्राथमिक शिक्षा प्राप्त की है, जबकि 22 प्रतिशत महिलाएँ अशिक्षित हैं। केवल 5 प्रतिशत महिलाएँ स्नातक या उससे अधिक शिक्षित हैं। कम शैक्षणिक स्तर सामाजिक सुरक्षा योजनाओं की जानकारी प्राप्त करने में बाधा बन सकता है।

मासिक आय

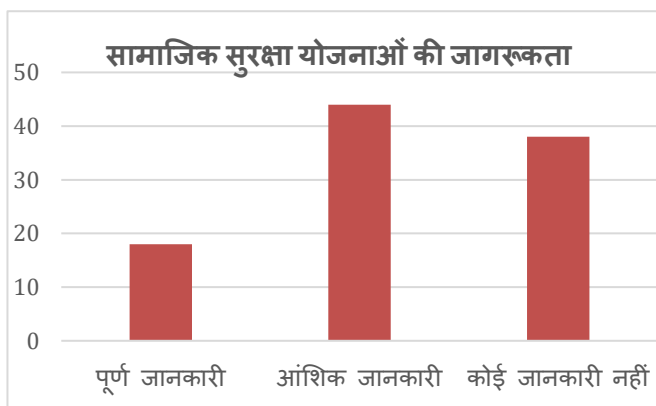
श्रेणी	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
₹5,000 से कम	18	18%
₹5,000–₹10,000	42	42%
₹10,001–₹15,000	28	28%
₹15,000 से अधिक	12	12%



कामगारों की मासिक आय ₹5,000–₹10,000 के बीच है। 18 प्रतिशत महिलाओं की आय ₹5,000 से कम है। इससे स्पष्ट होता है कि अधिकांश महिला घरेलू कामगार निम्न आय वर्ग से संबंधित हैं।

सामाजिक सुरक्षा योजनाओं की जागरूकता

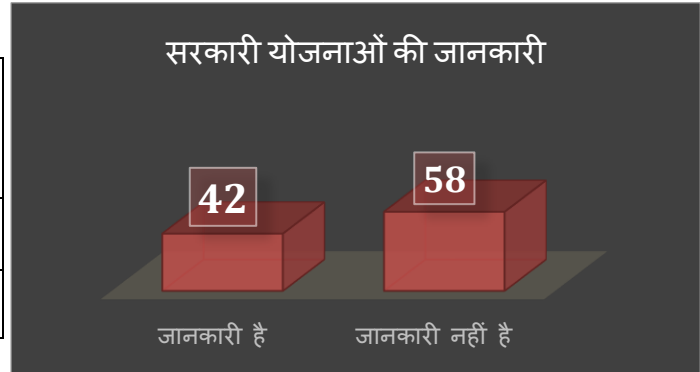
श्रेणी	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
पूर्ण जानकारी	18	18%
आंशिक जानकारी	44	44%
कोई जानकारी नहीं	38	38%



व्याख्या: ग्राफ से स्पष्ट होता है कि केवल 18 प्रतिशत महिलाओं को सामाजिक सुरक्षा योजनाओं की पूर्ण जानकारी है। 44 प्रतिशत महिलाओं को आंशिक जानकारी है, जबकि 38 प्रतिशत महिलाओं को कोई जानकारी नहीं है। अतः जागरूकता कार्यक्रमों की आवश्यकता है।

सरकारी योजनाओं की जानकारी

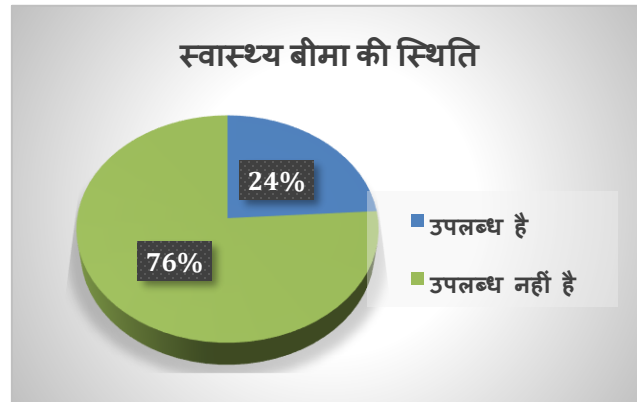
श्रेणी	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
जानकारी है	42	42%
जानकारी नहीं है	58	58%



व्याख्या: पाई चार्ट से स्पष्ट होता है कि 58 प्रतिशत महिला घरेलू कामगारों को सरकारी सामाजिक सुरक्षा योजनाओं की जानकारी नहीं है, जबकि केवल 42 प्रतिशत महिलाओं को जानकारी है। यह सरकारी योजनाओं के प्रचार-प्रसार की कमी को दर्शाता है।

स्वास्थ्य बीमा की स्थिति

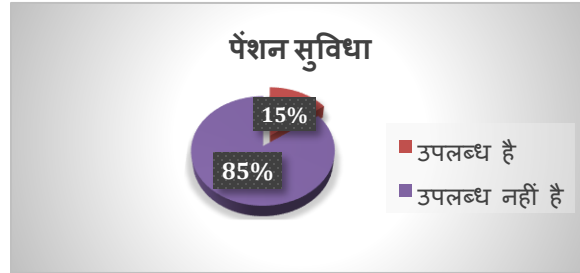
श्रेणी	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
उपलब्ध है	24	24%
उपलब्ध नहीं है	76	76%



व्याख्या: पाई चार्ट से स्पष्ट होता है कि 76 प्रतिशत महिला घरेलू कामगारों के पास स्वास्थ्य बीमा उपलब्ध नहीं है। केवल 24 प्रतिशत महिलाओं के पास स्वास्थ्य बीमा है। बीमारी की स्थिति में यह आर्थिक असुरक्षा का कारण बन सकता है।

पेंशन सुविधा

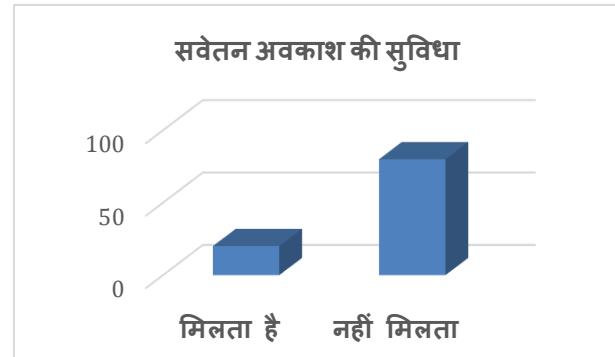
श्रेणी	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
उपलब्ध है	15	15%
उपलब्ध नहीं है	85	85%



व्याख्या: ग्राफ के अनुसार 85 प्रतिशत महिला घरेलू कामगारों के पास पेंशन सुविधा नहीं है और केवल 15 प्रतिशत महिलाओं को पेंशन सुविधा उपलब्ध है। यह वृद्धावस्था की आर्थिक सुरक्षा के लिए गंभीर समस्या है।

सवेतन अवकाश की सुविधा

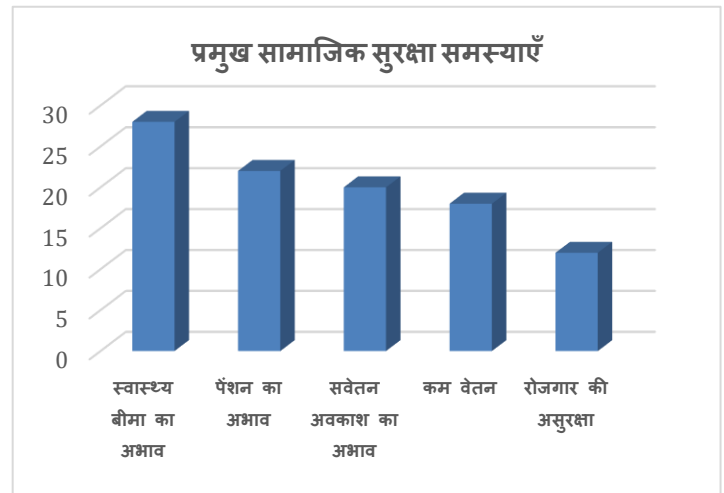
श्रेणी	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
मिलता है	20	20%
नहीं मिलता	80	80%



व्याख्या: ग्राफ से स्पष्ट होता है कि 80 प्रतिशत महिलाओं को सवेतन अवकाश नहीं मिलता। बीमारी या पारिवारिक समस्या के कारण काम पर न जाने पर उनकी आय बंद हो जाती है।

प्रमुख सामाजिक सुरक्षा समस्याएँ

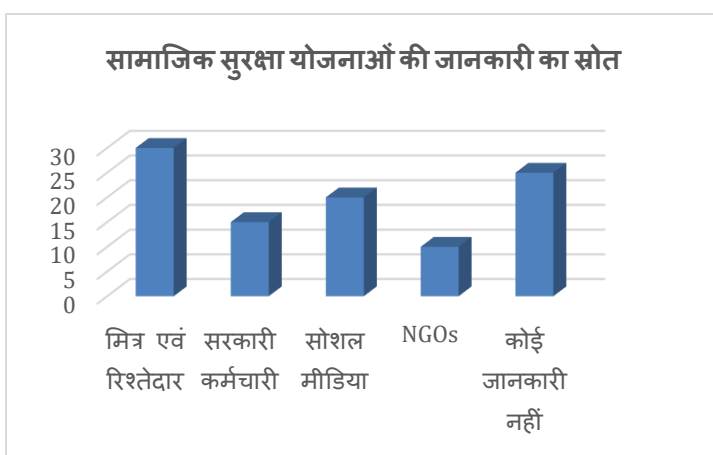
श्रेणी	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
स्वास्थ्य बीमा का अभाव	28	28%
पेंशन का अभाव	22	22%
सवेतन अवकाश का अभाव	20	20%
कम वेतन	18	18%
रोजगार की असुरक्षा	12	12%



व्याख्या: ग्राफ के अनुसार स्वास्थ्य बीमा का अभाव 28 प्रतिशत महिलाओं की प्रमुख समस्या है। इसके बाद पेंशन का अभाव 22 प्रतिशत और सवेतन अवकाश का अभाव 20 प्रतिशत है। इससे सामाजिक सुरक्षा की गंभीर स्थिति स्पष्ट होती है।

सामाजिक सुरक्षा योजनाओं की जानकारी का स्रोत

श्रेणी	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
मित्र एवं रिश्तेदार	30	30%
सरकारी कर्मचारी	15	15%
सोशल मीडिया	20	20%
NGOs	10	10%
कोई जानकारी नहीं	25	25%



व्याख्या: ग्राफ से स्पष्ट होता है कि 30 प्रतिशत महिलाओं को योजनाओं की जानकारी मित्रों एवं रिश्तेदारों से मिलती है। 25 प्रतिशत महिलाओं को किसी भी स्रोत से जानकारी नहीं मिलती। इसलिए सरकारी जागरूकता कार्यक्रमों को मजबूत करने की आवश्यकता है।

प्रमुख निष्कर्ष

1. अधिकांश महिला घरेलू कामगार 31-50 वर्ष की आयु वर्ग में हैं।
2. महिला घरेलू कामगारों का शैक्षणिक स्तर अपेक्षाकृत कम है।
3. अधिकांश महिलाओं की मासिक आय ₹5,000 से ₹10,000 के बीच है।
4. सामाजिक सुरक्षा योजनाओं के प्रति पूर्ण जागरूकता केवल 18 प्रतिशत महिलाओं में पाई गई।
5. 58% महिलाओं को सरकारी योजनाओं की जानकारी नहीं है।
6. 76% महिलाओं के पास स्वास्थ्य बीमा नहीं है।
7. 85% महिलाओं को पेंशन सुविधा प्राप्त नहीं है।
8. 80% महिलाओं को सवेतन अवकाश नहीं मिलता।
9. स्वास्थ्य बीमा का अभाव सबसे बड़ी सामाजिक सुरक्षा समस्या है।
10. रोजगार की असुरक्षा भी महिला घरेलू कामगारों की महत्वपूर्ण समस्या है।
11. मित्र एवं रिश्तेदार योजनाओं की जानकारी का प्रमुख स्रोत हैं।
12. सरकारी योजनाओं की जानकारी का प्रसार पर्याप्त नहीं है।

नागपुर शहर की महिला घरेलू कामगार शहरी अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण योगदान देती हैं। वे अनेक परिवारों के घरेलू कार्यों को संभालकर अपने परिवार की आय में भी योगदान करती हैं। इसके बावजूद उन्हें पर्याप्त सामाजिक सुरक्षा सुविधाएँ प्राप्त नहीं हैं। अध्ययन से स्पष्ट होता है कि स्वास्थ्य बीमा, पेंशन, सवेतन अवकाश, रोजगार सुरक्षा तथा सरकारी योजनाओं की जानकारी का अभाव महिला घरेलू कामगारों की प्रमुख समस्याएँ हैं। सामाजिक सुरक्षा योजनाओं के प्रभावी क्रियान्वयन, जागरूकता कार्यक्रमों, सरकारी पंजीकरण, स्वास्थ्य बीमा और पेंशन सुविधाओं के माध्यम से महिला घरेलू कामगारों की सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति में सुधार किया जा सकता है। अतः सरकार, नियोक्ता, गैर-सरकारी संगठन और समाज को मिलकर महिला घरेलू कामगारों को सामाजिक सुरक्षा प्रदान करने के लिए प्रभावी कदम उठाने चाहिए।

सुझाव

1. सभी महिला घरेलू कामगारों का स्थानीय स्तर पर पंजीकरण किया जाना चाहिए।
2. प्रत्येक महिला घरेलू कामगार को कम लागत या निःशुल्क स्वास्थ्य बीमा से जोड़ा जाना चाहिए।
3. वृद्ध महिला घरेलू कामगारों के लिए विशेष पेंशन योजना होनी चाहिए।
4. सरकार को नियमित रूप से जागरूकता शिविर आयोजित करने चाहिए।
5. घरेलू कामगारों के लिए न्यूनतम वेतन के नियमों का प्रभावी पालन होना चाहिए।
6. महिला घरेलू कामगारों को बीमारी तथा आवश्यक परिस्थितियों में सवेतन अवकाश मिलना चाहिए।
7. नागपुर शहर में महिला घरेलू कामगारों के लिए सहायता केंद्र स्थापित किए जाने चाहिए।
8. सरकारी विभागों, NGOs तथा महिला स्वयं सहायता समूहों को मिलकर कार्य करना चाहिए।

संदर्भ सूची

1. सामाजिक सुरक्षा एवं असंगठित क्षेत्र से संबंधित सरकारी रिपोर्टें।
2. महिला श्रम एवं घरेलू कामगारों से संबंधित शोध पत्र।
3. श्रम एवं रोजगार से संबंधित आधिकारिक प्रकाशन।
4. सामाजिक सुरक्षा एवं महिला सशक्तिकरण से संबंधित पुस्तकें।
5. घरेलू कामगारों के सामाजिक एवं आर्थिक अध्ययन से संबंधित शोध सामग्री।
6. ILO – Domestic Workers Convention, 2011 (No. 189).
7. ILO – Domestic Workers Across the World.
8. ILO – Women at Work.
9. ILO – Care Work and Care Jobs
10. ILO – World Social Protection Report 2024–26.